



Sh.Mahesh. Bhadkariya

01 Jun 1958

05:30 AM

Gwalior

Model: All-Remedies-Report

Order No: 121886801

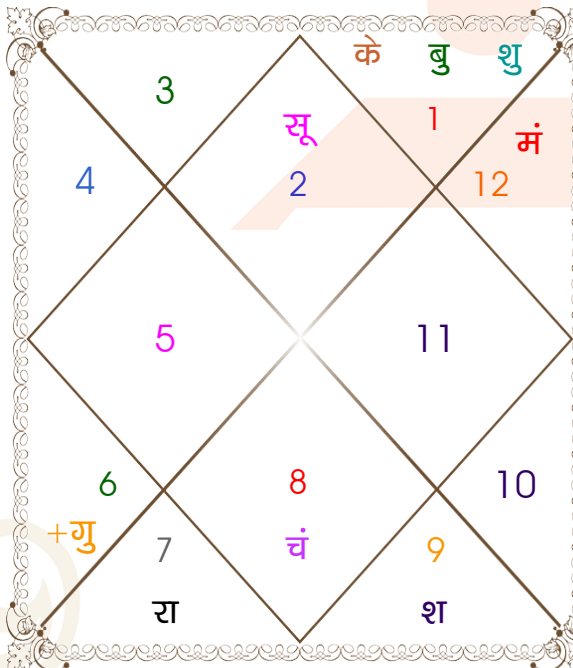
तिथि 01/06/1958 समय 05:30:00 वार रविवार स्थान Gwalior चित्रपक्षीय अयनांश : 23:16:42
अक्षांश 26:12:00 उत्तर रेखांश 78:09:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:17:24 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 21:48:29 घं	गण _____ : देव
वेलान्तर _____ : 00:02:23 घं	योनि _____ : मृग
सूर्योदय _____ : 05:25:25 घं	नाड़ी _____ : मध्य
सूर्यास्त _____ : 19:05:02 घं	वर्ण _____ : विप्र
चैत्रादि संवत _____ : 2015	वश्य _____ : कीटक
शक संवत _____ : 1880	वर्ग _____ : सर्प
मास _____ : ज्येष्ठ	र्युंजा _____ : मध्य
पक्ष _____ : शुक्ल	हंसक _____ : जल
तिथि _____ : 15	जन्म नामाक्षर _____ : ना-नवीन
नक्षत्र _____ : अनुराधा	पाया(रा.-न.) _____ : ताम्र-ताम्र
योग _____ : शिव	होरा _____ : सूर्य
करण _____ : विष्टि	चौघड़िया _____ : उद्देग

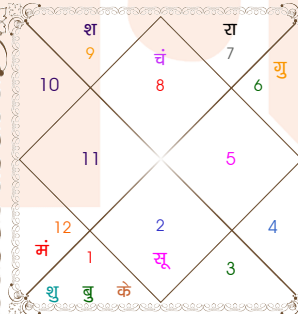
विंशोत्तरी	योगिनी
शनि 16वर्ष 7मा 29दि	भामरी 3वर्ष 6मा 2दि
चन्द्र	पिंगला
28/01/2025	03/12/2024
29/01/2035	03/12/2026
चन्द्र 29/11/2025	पिंगला 12/01/2025
मंगल 30/06/2026	धान्या 14/03/2025
राहु 30/12/2027	भामरी 03/06/2025
गुरु 30/04/2029	भद्रिका 13/09/2025
शनि 29/11/2030	उल्का 13/01/2026
बुध 29/04/2032	सिद्धा 04/06/2026
केतु 28/11/2032	संकटा 13/11/2026
शुक्र 30/07/2034	मंगला 03/12/2026
सूर्य 29/01/2035	

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			16:55:32	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			16:43:39	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	1.94	भातृ	पितृ	साधक
चंद्र			04:58:24	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	नीच राशि	1.30	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			02:13:21	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.05	ज्ञाति	भातृ	अतिमित्र
बुध			27:51:15	मेष	कृतिका	1	सूर्य	चंद्र	सम राशि	1.05	अमात्य	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		28:57:58	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	शत्रु राशि	0.86	आत्मा	धन	वध
शुक्र			06:31:29	मेष	अश्विनी	2	केतु	राहु	सम राशि	1.29	मातृ	कलत्र	विपत
शनि	व		00:05:08	धनु	मूल	1	केतु	केतु	सम राशि	1.36	कलत्र	आयु	विपत
राहु	व		07:31:35	तुला	स्वाति	1	राहु	राहु	मित्र राशि	---	---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		07:31:35	मेष	अश्विनी	3	केतु	राहु	मित्र राशि	---	---	मोक्ष	विपत

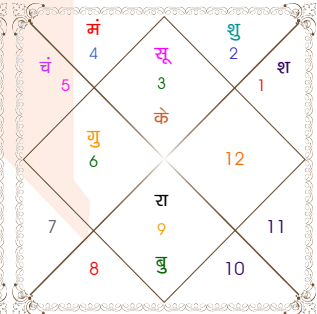
लग्न-चलित



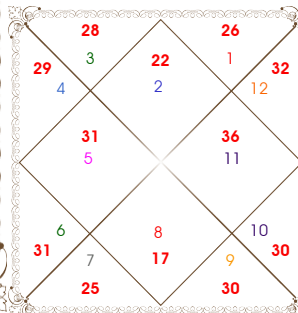
चन्द्र कुंडली



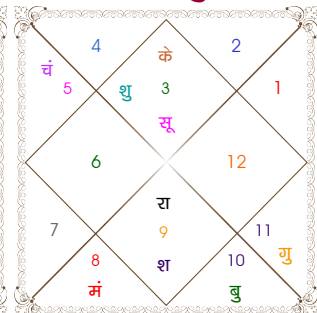
नवमांश कुंडली



सर्वाष्टकवर्ग



दशमांश कुंडली



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/06/1958-02/06/1958 07/11/1958-02/02/1961 17/09/1961-08/10/1961
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/01/1964-09/04/1966 03/11/1966-20/12/1966 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

अशुभ
शुभ
सम
शुभ
सम

क्षेत्र

दुर्घटना से बचाव
व्यावसायिक उन्नति
धन
शत्रु व रोग मुक्ति
दाम्पत्य कलह

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके क्रय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित्त या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

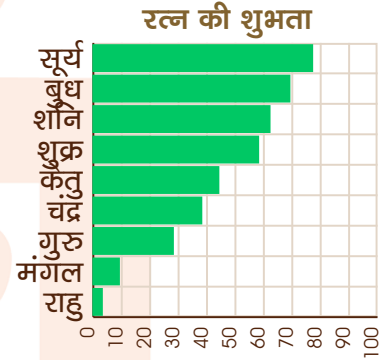
आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	77%	स्वास्थ्य, सुख
पन्ना	बुध	69%	कम खर्च, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	62%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	58%	कम खर्च, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	44%	व्यय, हानि
मोती	चंद्र	38%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि
पुखराज	गुरु	28%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	9%	हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
गोमेद	राहु	3%	शत्रु व रोग, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	29/01/1975	64%	12%	0%	75%	28%	64%	75%	16%	19%
बुध	29/01/1992	83%	12%	9%	81%	28%	64%	62%	3%	44%
केतु	29/01/1999	64%	12%	22%	69%	28%	64%	50%	0%	59%
शुक्र	29/01/2019	64%	12%	9%	75%	28%	70%	69%	16%	53%
सूर्य	28/01/2025	89%	50%	22%	69%	41%	41%	50%	0%	19%
चंद्र	29/01/2035	83%	56%	9%	75%	28%	58%	62%	0%	19%
मंगल	29/01/2042	83%	50%	34%	56%	41%	58%	62%	0%	53%
राहु	29/01/2060	64%	12%	0%	69%	28%	64%	69%	28%	19%
गुरु	29/01/2076	83%	50%	22%	56%	52%	41%	62%	3%	44%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

माणिक्य आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए पन्ना, नीलम एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया, मोती व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मूंगा व गोमेद रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य प्रथम भाव में स्थित हैं। अतः आपको शुक्र रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण करने से आपको उत्तम मित्र व उच्च पद की प्राप्ति होगी। सरकार से आपके अच्छे संबंध होंगे। सत्ता से जुड़े लोगों से आपके संबंध करीबी और मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आत्मविश्वास भाव में वृद्धि करेगा। तथा इसके प्रभाव से आपकी व्यक्तित्व में भी तेज आयेगा। आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। आपका चहुंमुखी विकास होगा। धन-धान्य बढ़ेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पत्ति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते हैं। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम 9 माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको उद्योग-व्यापार द्वारा सम्मान

दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है। तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यों से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का 9 माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। शनि ग्रह की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम आपको विद्वान वाकपटु और दयालु बनायेगा। नीलम शुभता से आप निर्भय चतुर और उदार प्रकृति के व्यक्ति बनेंगे। विवाह के माध्यम से आपको आर्थिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है। रत्न शुभता से आपको उत्तराधिकार में जमीन की प्राप्ति हो सकती है। इसके अलावा नीलम रत्न की शुभता आपको गूढशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध होगी।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते हैं। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपत्ति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते हैं। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह का हीरा रत्न धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। हीरा रत्न धारण करने से विदेश स्थानों की आय से आपके वैभव और आय में बढ़ोतरी होगी। यह रत्न आपको श्रेष्ठकर्मी से जोड़ेगा। आपको अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त होगा। शुक्र रत्न हीरा आपको विरोधियों से आत्मीयता दे सकता है। हीरा रत्न शुभता से आप वैभव, सुख सामग्री और भौतिक सुविधाओं पर अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। इस रत्न को धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकते हैं।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आप अलौकिक विद्याओं की ओर विशेष रूप से आकर्षित हो सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए आप जीवन के दायित्वों से पीछे हट सकते हैं। आपकी सोच में नकारात्मकता का भाव प्रभावी हो सकता है। यह रत्न आपको आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। संतान सुख और धन दोनों पक्ष के लिए

रत्न की प्रतिकूलता हो सकती है। यह रत्न विदेश स्थानों में मिलने वाली आपकी सफलता को सीमित कर सकता है। आपके रोग बढ़ सकते हैं। ऋणों का भुगतान आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। इसके अतिरिक्त रत्न प्रभाव से आपके शत्रुओं में बढ़ोतरी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके साहस में कमी करेगा।

केतु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपके भाग्योदय के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी सम्बंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने से आपको व्यापार में कई बार परिवर्तन करने पड़ सकते हैं। अपने मनोरथ पूरे करने के लिए आपको अत्यधिक प्रयास करने पड़ सकते हैं। चंद्र रत्न मोती विवाह में देरी कर सकता है। तथा इसके कारण जीवन साथी से आत्मियता की कमी की स्थिति बन सकती है। यह रत्न धारण कर आपमें धैर्य का अभाव और नेतृत्व करने की क्षमता की कमी हो सकती है। विदेश गमन को यह मुश्किल कर सकता है। अधीरता का भाव बढ़ सकता है। रत्न प्रतिकूलता में कमी करने के लिए आप विषय वासना में अत्यधिक लिप्त होने से बचें। जलीय यात्राओं में व्यय वृद्धि बढ़ सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थों का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे सकते हैं। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ा सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यों में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपकी न्यायशीलता प्रभावित हो सकती है। संघर्षों की अधिकता आपको जीवन में अधिक हो सकती है। रत्न धारण से धर्म क्षेत्र में आस्था की कमी हो सकती है। आप विपत्तियों से घबराकर कुमार्ग पर चल सकते हैं। अदालती मामलें आपको परेशान कर सकते हैं। यह रत्न आपकी आमदनी में कमी कर

सकता है। शिक्षा क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आप गलत तरीकों का प्रयोग कर सकते हैं। पुखराज रत्न आपको मनोरंजक और खेलकूद के क्षेत्रों में असफलता दे सकता है। आराम पसंद होने से आपके कष्ट बढ़ सकते हैं।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्टमेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती हैं। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों से आय प्राप्ति के अवसर दे सकता है। आपके बड़े भाई में अत्यधिक क्रोध भाव आ सकता है। आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है। मूंगा रत्न आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है। इस रत्न से संतान की पैदाइस में विलम्ब या गर्भपात जैसी स्थितियां भी आ सकती हैं। आपके बड़े भाई बहन वाद-विवाद में सम्मिलित हो सकते हैं। मूंगा रत्न आपको मित्रों से मतभेद और विरोध दे सकते हैं। इस रत्न को धारण करने पर आपके विरोधी प्रबल हो सकते हैं। आपको रोग, ऋण और शत्रुओं की अधिकता से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके कुटुंब में वाद-विवाद का कारण बन सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते हैं। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद आपको कुसंगति का शिकार कर सकता है। प्रतियोगिताओं में सफल होने के लिए आप कुमार्ग का प्रयोग कर सकते हैं। विपरीत धर्म के लोगों से आपकी मित्रता संबंध बढ़ सकते हैं। यह मित्रता आपको लाभ भी दे सकती है। रोग और आयु पक्ष के लिए गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल नहीं रहेगा। साहस की कमी आपको

बड़े बड़े कामों को अंजाम देने से रोक सकती है। गोमेद रत्न प्रभाव से आपको रोग, ऋण और शत्रुओं पर विजय पाने के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करना होगा। ऊपरी बाधाओं या कोई रहस्यमयी बीमारियों के प्रभाव में आप आ सकते हैं। गोमेद रत्न धारण से आपको मामा, मौसी या चाचा पक्ष से सुख कम प्राप्त होगा।

राहु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती हैं। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र

(28/01/2025 - 29/01/2035)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, मूंगा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(29/01/2035 - 29/01/2042)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, पन्ना, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(29/01/2042 - 29/01/2060)

पन्ना, नीलम, माणिक्य व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, मोती व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(29/01/2060 - 29/01/2076)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पन्ना, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व हीरा रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता है। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वित्तीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता है।

आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु की स्थिति से आपका जीवन संघर्षमय हो सकता है। मगर इन संघर्षों में आपको विजय प्राप्त होगी। पराक्रम से शत्रुओं पर प्रभुत्व बना रहेगा। यह योग आप में मानसिक तनाव व दबाव सहने की क्षमता में वृद्धि कर रहा है।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते हैं, यह योग मानसिक सुखों में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते हैं, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखें। जीवन साथी की भावनाओं को आहात करने से बचें। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

केतु की स्थिति द्वादश भाव में शुभ नहीं मानी गयी है, इसके परिणाम से आप

खचीले, चिंतित, प्रवासी, सनकी, चंचल बुद्धि, आपके अधिक व्यय धार्मिक कार्यों में होते हैं, आप इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति का प्रयास कर सकते हैं। आपको जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करना पड़ सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।